Western Philosophy 14

A - Priori Knowledge

Q1 विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक ज्ञान

कथनों अथवा प्रतिज्ञप्तियों के बीच प्रागनुभविक तथा अनुभवाश्रित
का भेद करने के अलावा एक और महत्वपूर्ण भेद विश्लेषणात्मक
तथा संश्लेषणात्मक कथनों के बीच किया जाता है। ये दोनों ही
प्रकार के भेद आधुनिक दर्शन में कान्ट ने किए थे,
यद्यपि लाइबनिज के विचारों में भी इनका संकेत मिलता है
और तभी से दर्शन तथा तर्कशास्त्र में इनका बहुत महत्व है
विश्लेषणात्मक संश्लेषणात्मक कि परिभाषा जो कान्ट ने दि थी
बिल्कुल वही परिभाषा आज नहीं दि जाती क्योंकि कान्ट की
वो परिभाषा संकुचित है। कान्ट के समय तक तर्कशास्त्र में
सिर्फ उद्देश्य (Subject) विधेय (Predicate) आकार की
प्रतिज्ञप्तियों की ही मान्यता थी उनके (कान्ट) अनुसार विश्लेषणात्मक
कथन ऐसे कथन है जिनके विधेय में उद्देश्य पद का मात्र
विश्लेषण किया जाता है, जैसे - त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा
होता है, सभी मनुष्य मनुष्य है, मनुष्य (उद्देश्य) विवेकशील (विधेय) है,
8 पिता पुरुष है इत्यादि विश्लेषणात्मक कथन है। इसी और
कुछ मनुष्य ईमानदार है. यह गुलाब लाल है, मेज
गोल है आदि संश्लेषणात्मक कथनों के उदाहरण है। ये
कथन ऐसे है जिनके विधेय में सिर्फ उद्देश्य पद का
विश्लेषण नहीं है, ~~बल्कि~~ बल्कि उसमें अनुभव के आधार
पर उद्देश्य पद का कोई गुण आरोपित किया जाता है

आज जो परिभाषा विश्लेषणात्मक - संश्लेषणात्मक
कथनों में दी जाती है उसकी मूल आत्मा वही है जो कान्ट
के परिभाषा में निहित है परन्तु उसका क्षेत्र विस्तृत है
अर्थात आधुनिक तर्कशास्त्र में उद्देश्य-विधेय आकार की
प्रतिज्ञप्ति के अलावा भिन्न अन्य प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को
भी मान्यता दि जाती है उनपर भी लागू होती है।